

उत्तर प्रदेश सहित पूरे देश में मलेरियारोधी पौधे की खेती कराने की तैयारी

चर्चा में क्यों?

13 जुलाई, 2022 को लखनऊ स्थित केंद्रीय औषधीय एवं सगंध पौधा संस्थान (सीमैप) के नदिशक प्रबोध कुमार त्रिविदी ने बताया कि हाल ही में उत्तर प्रदेश सरकार ने मलेरियारोधी पौधे आर्टमिसिया की नई प्रजाति सीआईएम-संजीवनी की कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग के लिये नई नीतिका मसौदा तैयार कर केंद्र सरकार को भेजा है।

प्रमुख बंदि

- सीमैप ने उत्तर प्रदेश सहित देशभर में मलेरियारोधी पौधे आर्टमिसिया की नई प्रजाति सीआईएम-संजीवनी की कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग के लिये चेन्नई की कंपनी सतत्व वैद नेचर्स ग्लोबल प्राइवेट लिमिटेड से अनुबंध किये हैं।
- यह कंपनी आर्टमिसिया की कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग कराएगी। साथ ही प्रसंस्करण से संबंधित प्रौद्योगिकी के विकास में योगदान देगी। कंपनी तैयार पौधों को किसान से लेकर दवा बनाने वाली कंपनियों तक पहुँचाएगी। इससे किसानों को उनकी उपज की कीमत खेत में ही मलि जाएगी।
- इससे एक तरफ मलेरिया की दवा बनाने के लिये वदिश से कच्चा माल नहीं मँगाना पड़ेगा, तो दूसरी तरफ किसानों को भी फायदा मल्लिगा।
- नदिशक प्रबोध कुमार त्रिविदी ने बताया कि कई वर्षों के शोध के बाद नई प्रजाति विकसित की गई है। यह पहले से चल रही कस्मि जीवन रक्षा और सीआईएम आरोग्य के बीच पॉली क्रस से विकसित की गई है। सेंटरल ड्रग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीडीआरआई) ने भी अपने शोध में इस पौधे को मलेरियारोधी दवा के लिये उपयुक्त माना है।
- प्रदेश में 2027 तक मलेरिया खतम करने का लक्ष्य रखा गया है। इसके लिये स्वास्थय वभिग लगातार अभियान चला रहा है। कई ज़िलों में पछिले साल से एपीआई (एनुअल पैरासाइट इंसाडेंस) की दर एक से नीचे मल्लि है। जून 2022 तक 26 लाख 77 हज़ार से अधिक सैपल की जाँच की गई, जसिमें 1077 की रपिर्ट पॉजिटिव आई हैं।
- उल्लेखनीय है कि आर्टमिसिया पौधे में आर्टीमिसिननि नामक तत्त्व पाया जाता है, जसिसे मलेरिया की दवा तैयार की जाती है। आर्टीमिसिननि मलेरिया फैलाने वाले रोगाणु प्लास्मोडियम फाल्सीपेरम को खतम कर देता है। यह पौधा आमतौर पर चीन में पाया जाता है। वहाँ से इसे भारत लाकर नई-नई प्रजाति तैयार की जा रही हैं। इस पर काउंसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च (सीएसआईआर) के सेंटरल इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिसिनल एंड एरोमैटिक प्लांट (सीमैप) और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय सहित कई संस्थानों ने प्रयोग किये हैं।
- सीमैप के वैज्ञानिकों ने आर्टमिसिया की नई प्रजाति सीआईएम-संजीवनी में आर्टीमिसिननि तत्त्व 2 फीसदी अधिक पाया। इस प्रजाति में मसतषिक ज्वर के साथ कैंसर सहित अन्य बीमारियों में प्रयोग होने वाली दवा बनाने वाले तत्त्व भी अधिक हैं। इससे खाने की गोली व इंजेक्शन तैयार किये जाते हैं।
- जर्नल ऑफ मेडिसिनल एंड एरोमैटिक प्लांट साइंसेज में प्रकाशित रपिर्ट में बताया गया है कि सीआईएम-संजीवनी किसानों और खेती से जुड़े उद्योग के लिये भी फायदेमंद है। रपिर्ट में कहा गया कि इस पौधे से दवा बनाने वाली कंपनी करीब 20 फीसदी लागत घटा सकती है।
- रपिर्ट में यह भी बताया गया कि आर्टमिसिया की खेती से किसानों को लगभग चार माह की अवधि में प्रत हेक्टेयर करीब 65 हज़ार रुपए का फायदा मलि सकता है। यही वजह है कि इस पौधे को लेकर भारतीय कंपनियों कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग कराने के लिये आगे आ रही हैं।